डा॰ जगन्नाथ मिश्र

24 जून 1937 – 19 अगस्त 2019

शैक्षणिक योग्यता:

विद्यालयी षिक्षा: बलुआ बाजार (सुपौल बिहार) से बी॰ए॰ (ऑनर्स), टी॰एन॰बी॰ कॉलेज (भागलपुर) से एम॰ए॰ (अर्थशास्त्र) एल॰एस॰ कॉलेज (मुजफ्फरपुर) से एवं पी॰एचडी॰ (पब्लिक फिनान्स) बिहार विश्वविद्यालय से।

सामाजिक कार्यकर्ता और प्रशासक, अर्थशास्त्री एवं राजनीतिज्ञ, डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर में व्याख्याता के रूप में जीवन आरंभ करके अन्ततः अर्थशास्त्र के विश्वविद्यालय आचार्य पद पर आसीन हुए। बिहार के हितों के लिए संघर्ष करनेवाले नेता के रूप में ख्यातिप्राप्त हैं, बिनोवा भावे द्वारा चलाये गये भूदान आन्दोलन में 1953 से 60 ई॰ तक सक्रियता से भागीदारी की और उत्तराधिकार में प्राप्त अपनी अधिकांश जमीन भूमिहीनों में बांट दी। भूमिहीनों को बड़े पैमाने पर भूमि उपलब्ध कराने की दिशा में तत्पर रहे।

(1) 1953 ई॰ में माध्यमिक परीक्षा देने के बाद सिंहभूम जिला के चाण्डिल में सर्वसेवा संघ के वार्षिक आयोजन में आचार्य विनोबा भावे और लोकनायक जयप्रकाश नारायण की प्रेरणा से भूदान–आन्दोलन में सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में प्रवेश किया। (2) भागलपुर के टी॰एन॰बी॰ कॉलेज में सर्वोदय परिषद् का गठन किया जिसके वार्षिक सम्मेलन को प्रतिवर्ष लोकनायक जयप्रकाश नारायण सम्बोधित करते रहे। वही उनके सर्वोदयी जीवन की शुरूआत हुई। (3) भूदान आन्दोलन के क्रम में पूरे राज्य का दौरा पाँव–पैदल संत बिनोवा भावे के साथ किया। (4) संत बिनोवा भावे के भ्रमण के क्रम में उन्होंने अपने परिवार से हजार एकड़ जमीन भूदान आन्दोलन को दान दिलायी। (5) भूमि हदबंदी कानून के अन्तर्गत अपनी अधिशेष भूमि बिहार राज्य सरकार को सौंप दी और उसके लिए किसी मुआवजे की मांग नहीं की। (6) परिवार का इतिहास स्वतंत्रता सेनानियों का इतिहास है। परिवार के निकटतम 11 सदस्य स्वतंत्रता संग्राम में सक्रियता से जुड़े रहे और जेल गये। उनमें स्व॰ पं॰ राजेन्द्र मिश्र, स्व॰ ललित नारायण मिश्र प्रमुख रहे हैं। उनमें से किसी ने सरकार से स्वतंत्रता सेनानी पेंशन की मांग नहीं की। (7) 1966 से बिहार विश्वविद्यालय के सिंडिकेट और सिनेट में कई बार सदस्य निर्वाचित हुए। अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के कोर्ट एवं जे॰एन॰यू॰ के कोर्ट में भी दो बार सदस्य चुने गये। 1968 में पहलीबार मुजफ्फरपुर, चम्पारण एवं सारण स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से बिहार विधान परिषद् के सदस्य निर्वाचित हुए। 1969 में राष्ट्रपति के ऐतिहासिक चुनाव में ललित बाबू के सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में बिहार में महत्वपूर्ण कार्य किया था। 1972, 1977, 1980, 1985 और 1990 में मधुबनी जिला के झंझारपुर से बिहार विधान सभा के लिए निरंतर सदस्य निर्वाचित हुए। 1972 में पहलीबार स्व॰ केदार नाथ पाण्डेय की सरकार में मंत्री बने। अब्दुल गफूर के मंत्रिमंडल में भी मंत्री नियुक्त हुए। 8 अप्रैल, 1975 को बिहार के पहलीबार मुख्यमंत्री हुए और 30 अप्रैल, 1977 तक उस पद पर बने रहे। 8 जून, 1980 को बिहार के दूसरीबार मुख्यमंत्री हुए जिस पद पर वे 13 अगस्त, 1983 तक बने रहे। तीसरीबार वे 6 दिसम्बर, 1989 को मुख्यमंत्री हुए जिस पर वे 10 मार्च, 1990 तक बने रहे। मार्च, 1989 में वे बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष नियुक्त हुए दुबारा वे अप्रैल, 1992 में बिहार प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 1978 में श्रीमती इन्दिरा गांधी के साथ कांग्रेस विभाजन में उनके पक्ष में सक्रिय भूमिका निभायी। 1978 में बिहार विधान सभा में पहलीबार प्रतिपक्ष के नेता निर्वाचित हुए। दूसरीबार मार्च, 1990 में बिहार विधान सभा में प्रतिपक्ष के नेता निर्वाचित हुए। 1988 के अप्रैल में राज्यसभा के लिए सदस्य निर्वाचित हुए। दूसरीबार अप्रैल, 1994 में वे राज्यसभा के सदस्य निर्वाचित हुए। 10 जून, 1995 को वे स्व॰ पी॰वी॰ नरसिंह राव मंत्रिमंडल में ग्रामीण विकास मंत्री नियुक्त हुए और जनवरी, 1996 में उन्हें कृषि मंत्री का प्रभार दिया गया जिस पद पर वे 16 मई, 1996 तक बने रहे। ग्रामीण विकास मंत्री के रूप में उन्होंने त्रिसूत्री परिवार कल्याण योजना प्रारंभ की जिसके अंतर्गत वृद्धावस्था पेंशन गरीबी रेखा से नीचे के परिवार के प्रमुख की मृत्यु पर 10 हजार अनुकम्पा अनुदान और गर्भवती महिला को

पौष्टिक आहार योजना में दो बच्चों के लिए 500–500 रू॰ का अनुदान सम्मिलित था। उन्होंने बिहार के सभी 727 प्रखंडों को सुनिश्चित रोजगार योजना में सम्मिलित किया तथा बिहार को प्रतिवर्ष 3 लाख इन्दिरा आवासों की स्वीकृति दी। (8) केन्द्रीय कृषि मंत्री के रूप में बिहार के जिलों में कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं 16 कृषि सम्बंधी विषयों पर शोध प्रतिष्ठानों की स्वीकृति करायी। (9) उर्दू भाषा को राज्य की द्वितीय भाषा का दर्जा देने के लिए इन्हें लखनऊ की **मिर–एकेडमी द्वारा "मिर–ए–उर्दू"** की उपाधि दी गयी। (10) उर्दू तथा अल्पसंख्यक समुदाय के लिए की गयी सेवाओं को देखते हुए देश के अनेक राज्यों में अवस्थित अनेक संस्थाओं ने भी इन्हें अलग–अलग उपाधियाँ दी हैं। (11) दिल्ली में हुए विश्व उर्दू सम्मेलन में उन्हें मोहसिने उर्दू की उपाधि दी गयी। (12) 1982 ई॰ में प्रधानमंत्री के विशेष प्रतिनिधि के रूप में मास्को दौरे पर गये। (13) मार्च 1996 में इजिप्टि के कैरो में एफ्रो–एशियन रूरल रिकन्स्ट्रकशन ऑरगेनाजेशन के 12वें महाधिवेशन में भारतीय प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। (14) बिहार की काराओं में विचाराधीन कैदियों की स्थिति का अध्ययन कराया और उसकी रिपोर्ट राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग को आवश्यक कार्रवाई के लिए भेजी।

निम्नलिखित षैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना की–

(1) 1976 में ललित नारायण मिश्र आर्थिक विकास एवं सामाजिक परिवर्तन संस्थान, पटना (2) ललित नारायण मिश्र व्यापार प्रबंधन महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर (2) 1975 ललित नारायण मिश्र तिरहुत महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर (3) घोघरडीहा महाविद्यालय, घोघरडीहा जिला मधुबनी (बिहार)। (4) बिहार आर्थिक अध्ययन संस्थान, पटना (5) ललित नारायण मिश्र मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा की स्थापना के प्रेरक तत्व रहे।

निबंधन लेखन एवं शोध–मार्गदर्षनः – ख्याति प्राप्त पत्रिकाओं में लगभग 40 शोध पत्र लिखे। उनके अधीन उनके निर्देशन में 20 विद्वानों ने अर्थशास्त्र विषय में पी॰एचडी॰ उपाधि प्राप्त की। अनेक शोधकर्ताओं का मार्ग निर्देशन किया। इनके द्वारा लिखित अबतक 23 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है।